बाबा मुक्तानन्द के जन्मदिवस महोत्सव २०२० के उपलक्ष्य में उनके साथ एक प्रसंग

अनुग्राहिका शक्ति : गुरुदर्शन के द्वारा जागृति

सन् १९७८ में मैं सेवा अर्पित कर रही थी जब बाबा जी अपनी तीसरी विश्वयात्रा के दौरान ऑस्ट्रेलिया के मॅलबर्न शहर में थे। वह शक्तिपात ध्यान-शिविर के दूसरे दिन की शाम थी और बाबा जी अपने कमरे में अभी-अभी लौटे ही थे। मैं पास में ही अपना कोई काम समाप्त कर रही थी कि तभी कमरे के बाहर के दरवाज़े पर खटखटाने की आवाज़ हुई। मैंने दरवाज़ा खोला तो देखा कि छोटे क़द और प्रसन्नमुख की एक भली-सी कैथलिक नन [इसाई तपस्विनी] दरवाज़े पर खड़ी हैं।

"स्वामी मुक्तानन्द यहाँ हैं?" उन्होंने पूछा। मैंने उन्हें समझाया कि बाबा जी जा चुके हैं तो वे निराश-सी हो गईं। उन्होंने कहा, "ओह, कृपया मेरी मदद कीजिए, मैं अपने मठ से सत्तर मील की यात्रा करके आई हूँ। उनके दर्शन किए बिना मैं वापस नहीं जाना चाहती।" यह सुनकर, मैंने बाबा जी के सेवक को ढूँढ़ा और उन्हें इन कैथलिक नन के बारे में बताया।

कुछ मिनट बाद बाबा जी बाहर आए, अपनी कुर्सी पर बैठे और उन्होंने उन नन को अपने समीप आने के लिए इशारा किया। वे रोने लगीं और बाबा जी के चरणों में गिर पड़ीं। उन्होंने बाबा जी को बताया कि उन्होंने टी. वी. पर समाचार में बाबा जी को देखा था और तब वे सहज ही ध्यान में उतर गईं। उसके बाद, उन्हें अपने धर्म-शास्त्र बाइबिल में बताई गई सच्चाइयों की प्रत्यक्ष अनुभूतियाँ होने लगीं, जिनका अध्ययन उन्होंने अपनी युवावस्था में किया था—आख़िरकार अब, उन्हें उन सच्चाइयों के सार का अर्थ समझ में आने लगा था।

अत्यन्त करुणा से बाबा जी ने उनके आँसू पोंछे। "बहुत अच्छा!" ऐसा कहकर उन्होंने मुझसे उन नन को अपनी पुस्तक 'कुण्डलिनी : जीवन का रहस्य' देने को कहा और यह भी कहा कि इसके पहले कि वे नन अपने मठ के लिए प्रस्थान करें, मैं उन्हें गरमागरम भोजन अवश्य कराऊँ।

©२०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।